



राजपत्र, हिमाचल प्रदेश (असाधारण)

हिमाचल प्रदेश राज्य शासन द्वारा प्रकाशित

शिमला, शनिवार, ४ जुलाई, १९९८/१३ भाषा, १९७०

हिमाचल प्रदेश सरकार

विधि विभाग
(विधायी एवं राजभाषा खण्ड)

अधिसूचना

शिमला-२, ४ जुलाई, १९९८

संख्या-एल० एल० आर० (राजभाषा) की (१६) २४/९८.—“इंडियन स्टाम्प (हिमाचल प्रदेश अमैन्डमेन्ट) ऐक्ट, १९६९ (१९७० का १६)” के राजभाषा (हिन्दी) अनुवाद को हिमाचल प्रदेश की राज्यपाल

के तारीख प्रथम जुलाई, 1998 के प्राधिकार के अधीन एतद्वारा राजपत्र, हिमाचल प्रदेश में प्रकाशित किया जाता है और यह हिमाचल प्रदेश राजभाषा (अनुपूरक उपबन्ध) अधिनियम, 1981 (1981 का 12) की धारा 3 के अधीन उक्त अधिनियम का राजभाषा (हिन्दी) में प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

आदेश द्वारा;

हस्ताक्षरित/-
सचिव (विधि)।

भारतीय स्टाम्प (हिमाचल प्रदेश संशोधन) अधिनियम, 1969

(1970 का 16)

(तारीख 26-6-70 को राष्ट्रपति द्वारा यथा अनुमत)

हिमाचल प्रदेश में यथा-लागू भारतीय स्टाम्प अधिनियम, 1899 (1899 का 2) का संशोधन करने के लिए अधिनियम ।

भारत गणराज्य के बीसवें वर्ष में हिमाचल प्रदेश विधान सभा द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित हो :—

1. (1) इस अधिनियम का संक्षिप्त नाम भारतीय स्टाम्प (हिमाचल प्रदेश संशोधन) अधिनियम, 1969 है । संक्षिप्त नाम और विस्तार ।

(2) इसका विस्तार सम्पूर्ण हिमाचल प्रदेश पर है ।

2. हिमाचल प्रदेश में यथा लागू भारतीय स्टाम्प अधिनियम, 1899 में उक्त अधिनियम से उपाबद्ध अनुसूची 1-क के स्थान पर, इसमें इसके पश्चात् इस अधिनियम से उपाबद्ध अनुसूची रखी जाएगी । भारतीय स्टाम्प अधिनियम, 1899 से उपाबद्ध अनुसूची 1-क का प्रतिस्थापन ।

3. पंजाब पुनर्गठन अधिनियम, 1966 की धारा 5 के अधीन हिमाचल प्रदेश में जोड़े गए क्षेत्रों में यथा-प्रवृत्त इंडियन स्टाम्प (पंजाब अमैन्डमेन्ट) ऐक्ट, 1922, इंडियन स्टाम्प (पंजाब अमैन्डमेन्ट) ऐक्ट, 1960, इंडियन स्टाम्प (पंजाब अमैन्डमेन्ट) ऐक्ट, 1964 और इंडियन स्टाम्प (पंजाब अमैन्डमेन्ट) ऐक्ट, 1965 और भारत सरकार, गृह मंत्रालय की अधिसूचना सं० जी० एस० आर० 518 (एफ 414/63-यू टी एल-65) तारीख 18 मार्च, 1964 द्वारा हिमाचल प्रदेश के पुराने क्षेत्रों में यथा-विस्तारित अनुसूची 1-क एतद्द्वारा निरसित किए जाते हैं : निरसन और व्यावृत्तियां ।

परन्तु उक्त अधिनियमों के अधीन की गई कोई बात या कार्रवाई, इस अधिनियम के अधीन की गई समझी जाएगी ।

4. पुराने क्षेत्रों में यथा प्रवृत्त और लागू समय-समय पर यथा संशोधित (अनुसूची 1-क के सिवाए) भारतीय स्टाम्प (हिमाचल प्रदेश संशोधन) अधिनियम, 1952 और तदधीन बनाए गए सभी नियम, विनियम, अधिसूचना, आदेश और जारी किए गए सभी निदेश और अनुदेश, जो पुराने क्षेत्रों में प्रवृत्त हैं पंजाब पुनर्गठन अधिनियम, 1966 की धारा 5 के अधीन हिमाचल प्रदेश में अन्तरित क्षेत्रों को एतद्द्वारा विस्तारित किए जाते हैं और वहां प्रवृत्त होंगे । भारतीय स्टाम्प (हिमाचल प्रदेश संशोधन) अधिनियम, 1952 का विस्तारण ।

अनुसूची 1-क

कुछ लिखतों पर स्टाम्प शुल्क

टिप्पण.—अनुसूची 1-क के अनुच्छेदों को संख्यांकित किया गया है ताकि वे अनुसूची 1 के समान अनुच्छेदों के समरूप हो जाएं।

लिखतों का वर्णन 1	उचित स्टाम्प शुल्क 2
1. अभिस्वीकृति.—किसी ऋण की रकम या मूल्य में बीस रुपए से अधिक की जो ऋणी द्वारा या उसकी ओर से किसी बही में (जो बैंककार की पास बुक से भिन्न है) या किसी पृथक कागज के टुकड़े पर, साक्ष्य निमित्त लिखी जाए या हस्ताक्षरित की जाए, जबकि ऐसी बही या कागज लेनदार के कब्जे में छोड़ दिया गया हो	पच्चीस पैसे।
परन्तु यह तब जब कि ऐसी अभिस्वीकृति में उस ऋण के चुकाने का कोई वचन या ब्याज देने का, या किसी माल या अन्य सम्पत्ति का परिदान करने का, अनुबन्ध अन्तर्विष्ट नहीं है।	
2. प्रशासन बन्ध-पत्र.—जिसके अन्तर्गत सरकारी बचत बैंक अधिनियम, 1873 की धारा 6 के अधीन भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम, 1925 की धाराएं 291, 375 और 376 में दिया गया कोई बन्धपत्र है:—	
(क) जहां कि उसकी रकम 1,000 रुपए से अधिक नहीं है;	वही शुल्क जो ऐसी रकम के लिए बन्ध-पत्र (सं0 15) पर लगता है।
(ख) किसी अन्य मामले में।	पंद्रह रुपए।
3. दत्तक बिलेख, अर्थात् कोई लिखत (विल से भिन्न) जो दत्तक-ग्रहण के अभिलेख स्वरूप है या दत्तक-ग्रहण के लिए प्राधिकार प्रदत्त करती है या प्रदत्त करने के लिए तात्पर्यित है।	सैंतीस रुपए पचास पैसे।
अधिवक्ता—अधिवक्ता के रूप में प्रविष्टि (सं0 30) देखिए।	
4. शाय-पत्र.—जिसके अन्तर्गत, उन व्यक्तियों के मामले में जो शाय की बजाय, प्रतिज्ञान करने या घोषणा करने के लिए विधि द्वारा अनुज्ञात है, कोई प्रतिज्ञान या घोषणा है।	तीन रुपए।

छूटें

लिखित रूप में शपथपत्र या घोषणा जब कि वह —

- (क) सेना अधिनियम, 1950 या वायु सेना अधिनियम, 1950 के अधीन भर्ती होने के लिए शर्त के रूप में;
- (ख) किसी न्यायालय में या किसी न्यायालय के अधिकारी के समक्ष फाईल किए जाने या उपयोग में लाए जाने के तत्काल प्रयोजन के लिए; या
- (ग) किसी व्यक्ति को कोई पेंशन या पुण्यार्थ भत्ता प्राप्त करने के लिए समर्थ बनाने के एक मात्र प्रयोजन के लिए की गई है।

5. करार या करार का ज्ञापन—

- (क) यदि वह विनियम-पत्र के विक्रय से सम्बन्धित है;
- (ख) यदि वह सरकारी प्रतिभूति के विक्रय से या किसी निगमित कम्पनी या अन्य निगमित निकाय में, के शेयर के विक्रय से सम्बन्धित है;
- (ग) यदि उसके लिए अन्यथा उपबन्ध नहीं किया गया है।

चालीस पैसे।

बाईस रुपए और पचास पैसे से अधिक न होते हुए, प्रतिभूति या शेयर के मूल्य के प्रत्येक दस हजार रुपए या उसके भाग के लिए पच्चीस पैसे।

दो रुपए पच्चीस पैसे।

छूटें

करार या करार का ज्ञापन —

- (क) जो अनन्यतः माल या वाणिज्य के विक्रय के लिए है या उससे संबन्धित है और सं० 43 के अधीन प्रभार्य नोट या ज्ञापन नहीं है;
- (ख) जो केन्द्रीय सरकार को किन्हीं ऐसी निविदाओं के रूप में किए गए हैं जो किसी उधार के लिए हैं या उससे सम्बन्धित हैं;

पट्टे के लिए करार पट्टा (सं० 35) देखिए।

6. हक-विलेखों के निक्षेप, पण्डित या गिरवी से सम्बन्धित करार, अर्थात् निम्नलिखित से संबन्धित करार को साक्ष्य करने वाली कोई लिखत —

- (1) ऐसे हक-विलेखों या लिखतों का निक्षेप जिससे किसी भी संपत्ति पर (विषय प्रतिभूति से भिन्न) हक का साक्ष्य हो जाता है या है, या

(2) जंगम सम्पत्ति का पण्यम् या गिरवी, जहां कि ऐसा निक्षेप, पण्यम् या गिरवी, उधार में अग्रिम में दिए गए या दिए जाने वाले धन के अथवा वर्तमान या भावी ऋण के चुकाए जाने के लिए प्रतिभूति के रूप में की गई है —

(क) यदि ऐसा उधार या ऋण, मांग पर या ऐसे समय पर जो करार को साक्ष्यित करने वाली लिखत की तारीख से तीन मास से अधिक है, प्रतिसंदेय है —

(i) जब उधार या ऋण की रकम 200 रुपए से अधिक नहीं है । साठ पैसे ।

(ii) जब यह रकम 200 रुपए से अधिक है, किन्तु 400 रुपए से अधिक नहीं है । एक रुपया बीस पैसे ।

जब यह 400 रुपए से अधिक है, किन्तु 600 रुपए से अधिक नहीं है । एक रुपया पैंसठ पैसे ।

जब यह 600 रुपए से अधिक है, किन्तु 800 रुपए से अधिक नहीं है । एक रुपया पचानवें पैसे ।

जब यह 800 रुपए से अधिक है, किन्तु 1,000 रुपए से अधिक नहीं है । दो रुपए सत्तर पैसे ।

जब यह 1,000 रुपए से अधिक है, किन्तु 1,200 रुपए से अधिक नहीं है । तीन रुपए तीस पैसे ।

जब यह 1,200 रुपए से अधिक है, किन्तु 1,600 रुपए से अधिक नहीं है । चार रुपए बीस पैसे ।

जब यह 1,600 रुपए से अधिक है, किन्तु 2,500 रुपए से अधिक नहीं है । छः रुपए तीस पैसे ।

जब यह 2,500 रुपए से अधिक है, किन्तु 5,000 रुपए से अधिक नहीं है । बारह रुपए पचहत्तर पैसे ।

जब यह 5,000 रुपए से अधिक है, किन्तु 7,500 रुपए से अधिक नहीं है । अठारह रुपए पचहत्तर पैसे ।

जब यह 7,500 रुपए से अधिक है, किन्तु 10,000 रुपए से अधिक नहीं है । चौबीस रुपए पैतालीस पैसे ।

जब यह 10,000 रुपए से अधिक है, किन्तु 15,000 रुपए से अधिक नहीं है । सैंतीस रुपए पचानवें पैसे ।

जब यह 15,000 रुपए से अधिक है, किन्तु 20,000 रुपए से कम है । उनचास रुपए पचानवें पैसे ।

जब यह 20,000 रुपए से अधिक है, किन्तु 25,000 रुपए से अधिक नहीं है । इकसठ रुपए पचानवें पैसे ।

जब यह 25,000 रुपए से अधिक है, किन्तु 30,000 रुपए से अधिक नहीं है । छिहत्तर रुपए पांच पैसे ।

और 30,000 रुपए से अधिक प्रत्येक अतिरिक्त 10,000 रुपए या उसके किसी भाग के लिए । चौबीस रुपए पैतालीस पैसे ।

1

2

(ख) यदि ऐसा उधार या ऋण ऐसे समय पर प्रति-संदेय है जो ऐसी लिखत की तारीख से तीन मास से अधिक नहीं है।

शुल्क का ग्राधा जो ऐसी प्रतिभू-रकम के लिए खण्ड (क) (i) या खण्ड (क) (ii) के अधीन उधार या ऋण पर लगता है।

छूट

माल के पण्यम् या गिरवी की कोई लिखत यदि यह अनुप्रमाणित हो।

7. मुह्तारनामा के निष्पादन में,—न्यासियों का नियुक्त किया जाना या जंगम या स्थावर सम्पत्ति का नियोजन, जहां वह ऐसी लिखत में, जो विल न हो, किया गया हो।

सैंतीस रुपए पचास पैसे।

8. आंकना या मूल्यांकन.—जो किसी वाद के अनुक्रम में न्यायालय के आदेश के अधीन न किया जाकर अन्यथा किया गया है —

(क) जहां कि रकम 1,000 रुपए से अधिक नहीं हैं;

वही शुल्क जो, ऐसी रकम के प्रति बन्धपत्र (सं 0 16) पर लगता है।

(ख) किसी अन्य मामले में।

पन्द्रह रुपए।

छूटें

(क) आंकना या मूल्यांकन जो केवल एक पक्षकार की जानकारी के लिए किया गया है और जो या तो करार या विधि के प्रवर्तन द्वारा पक्षकारों के बीच किसी भी रीति में आवद्धकर नहीं है।

(ख) भाटक के रूप में भूमि स्वामी को दी जाने वाली रकम अभिनिश्चित करने के प्रयोजन के लिए फसलों को आंकना।

9. शिक्षुता विलेख, जिसके अन्तर्गत प्रत्येक लेख है जो किसी ऐसे शिक्षु, लिपिक या सेवक की सेवा या अध्यापन से सम्बन्धित है जो किसी मास्टर के पास किसी वृत्ति, व्यापार या नियोजन को सीखने के लिए रखा गया है किन्तु जो शिक्षुता नियमावली (सं 0 11) नहीं है।

जसा अनुसूची 1 में है।

छूट

शिक्षुता-लिखत-जो एप्रैण्टिसैज ऐक्ट, 1850 के अधीन किसी मजिस्ट्रेट द्वारा निष्पादित की गई है या जिसके द्वारा कोई व्यक्ति किसी लोक पूर्त द्वारा या उसके प्रभार में शिक्षु रखा गया है।

10. कम्पनी के संगम अनुच्छेद —

- (क) जब कम्पनी की प्राधिकृत पूंजी एक लाख रुपए साठ रुपए ।
से अधिक नहीं है ;
- (ख) अन्य मामलों में एक सौ बीस रुपए ।

छूट

ऐसे संगम के अनुच्छेद जो लाभार्जन के लिए नहीं बनाया गया है और जो कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 25 के अधीन रजिस्ट्रीकृत किया गया है ।

कम्पनी का संगम ज्ञापन (सं० 39) भी देखिए ।

11. कर्कों की नियमावली

जैसा अनुसूची 1 में है ।

समनुदेशन — यथास्थिति, हस्तान्तरण-पत्र (सं० 23), अन्तरण (सं० 62) और पट्टे का अन्तरण (सं० 63) देखिए ।
अटर्नी — अटर्नी (सं० 30) और मुस्तारनामा (सं० 48) वाली प्रविष्टि देखिए ।

दत्तक ग्रहण करने का अधिकार —

दत्तक विलेख (सं० 3) देखिए ।

12. पंचाट, अर्थात् वाद के अनुक्रम में न्यायालय के आदेश से अन्यथा किए गए किसी निर्देश में मध्यस्थ या अधिनिर्णायक द्वारा दिया गया कोई लिखित विनिश्चय जो विभाजन का निर्देश देन वाला पंचाट नहीं है —

- (क) जहाँ कि उस सम्पत्ति की, जिससे पंचाट सम्बन्धित है, रकम या मूल्य जो ऐसे पंचाट में उपवर्णित हो, 1,000 रुपए से अधिक नहीं है ;
- (ख) यदि वह 1,000 रुपए से अधिक है, किन्तु 5,000 रुपए से अधिक नहीं है ;
और 5,000 रुपए से अधिक प्रत्येक अतिरिक्त 1,000 रुपए या उसके किसी भाग के लिए ।

वही शुल्क जो उतनी ही रकम के बंधपत्र (सं० 15) पर लगता है ।

पन्द्रह रुपए ।

एक सौ बारह रुपए पचास पैसे अधि-
कतम के अधीन रहते हुए एक रुपया
पन्द्रह पैसे ।

13. विनियम पत्र

जैसा अनुसूची 1 में है ।

14. वहन-पत्र (जिसके अन्तर्गत पारगामी वहन-पत्र आता है)

जैसा अनुसूची 1 में है ।

15. बन्ध-पत्र जैसा कि धारा 2 (5) द्वारा परिभाषित किया गया है, किन्तु जो डिबेन्चर (सं० 27) नहीं है और जिसक

1

2

लिए इस अधिनियम द्वारा या न्यायालय फीस अधिनियम, 1870 द्वारा अन्यथा उपबन्ध नहीं किया गया है --

- जहां कि प्रतिभूत रकम या मूल्य 10 रुपए से अधिक नहीं है;
- जहां कि वह 10 रुपए से अधिक है और 50 रुपए से अधिक नहीं है;
- जहां कि वह 50 रुपए से अधिक है और 100 रुपए से अधिक नहीं है;
- जहां 100 रुपए से अधिक है और 200 रुपए से अधिक नहीं है;
- जहां 200 रुपए से अधिक है और 300 रुपए से अधिक नहीं है;
- जहां वह 300 रुपए से अधिक है और 400 रुपए से अधिक नहीं है;
- जहां वह 400 रुपए से अधिक है और 500 रुपए से अधिक नहीं है;
- जहां वह 500 रुपए से अधिक है और 600 रुपए से अधिक नहीं है;
- जहां वह 600 रुपए से अधिक है और 700 रुपए से अधिक नहीं है;
- जहां वह 700 रुपए से अधिक है और 800 रुपए से अधिक नहीं है;
- जहां वह 800 रुपए से अधिक है और 900 रुपए से अधिक नहीं है;
- जहां वह 900 रुपए से अधिक है और 1,000 रुपए से अधिक नहीं है;
- और 1,000 रुपए से अधिक प्रत्येक 500 रुपए या उसके किसी भाग के लिए ।

- तीस पैसे ।
- साठ पैसे ।
- एक रुपया पन्द्रह पैसे ।
- दो रुपए पच्चीस पैसे ।
- तीन रुपए चालीस पैसे ।
- चार रुपए पचास पैसे ।
- पांच रुपए पैसठ पैसे ।
- नौ रुपए ।
- दस रुपए पचास पैसे ।
- बारह रुपए ।
- तेरह रुपए पचास पैसे ।
- पन्द्रह रुपए ।
- सात रुपए पचास पैसे ।

प्रशासन बन्ध-पत्र (सं० 2) पोत बन्ध-पत्र (सं० 16)
सीमा शुल्क बन्धक-पत्र (सं० 26) क्षतिपूर्ति बन्ध-
पत्र (सं० 34) जहाजी माल बन्ध-पत्र (सं० 56)
प्रतिभूति बन्ध-पत्र (सं० 57) देखिए ।

छूट

बन्धपत्र जबकि वह किसी व्यक्ति द्वारा इस बात की प्रतिभूति देने के प्रयोजन के लिए निष्पादित किया जाए कि किसी पूर्व औषधालय या चिकित्सालय या लोक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य के लिए दिए गए प्राइवेट चन्दों से व्युत्पन्न हुई स्थानीय आय प्रति मास किसी विनिर्दिष्ट राशि से कम नहीं होगी ।

16. पोत बन्ध-पत्र -- अर्थात्, कई लिखत जिसके द्वारा समुद्र-गामी पोत का मास्टर पोत की प्रतिभूति पर धन उधार लेता है जिससे वह पोत का परिरक्षण करने में तथा उसकी सन्तुष्ट-यात्रा को अग्रसर करने में समर्थ हो सके --

जहां कि प्रतिभूत रकम या मूल्य 10 रुपए से अधिक नहीं है;

जहां कि वह 10 रुपए से अधिक है और 50 रुपए से अधिक नहीं है;

जहां कि वह 50 रुपए से अधिक है और 100 रुपए से अधिक नहीं है;

जहां कि वह 100 रुपए से अधिक है और 200 रुपए से अधिक नहीं है;

जहां कि वह 200 रुपए से अधिक है और 300 रुपए से अधिक नहीं है;

जहां कि वह 300 रुपए से अधिक है और 400 रुपए से अधिक नहीं है;

जहां कि वह 400 रुपए से अधिक है और 500 रुपए से अधिक नहीं है;

जहां कि वह 500 रुपए से अधिक है और 600 रुपए से अधिक नहीं है;

जहां कि वह 600 रुपए से अधिक है और 700 रुपए से अधिक नहीं है;

जहां कि वह 700 रुपए से अधिक है और 800 रुपए से अधिक नहीं है;

जहां कि वह 800 रुपए से अधिक है और 900 रुपए से अधिक नहीं है;

जहां कि वह 900 रुपए से अधिक है और 1,000 रुपए से अधिक नहीं है;

और 1,000 रुपए से अधिक प्रत्येक 500 रुपए या उसके भाग के लिए ।

तीस पैसे ।

साठ पैसे ।

एक रुपया पन्द्रह पैसे ।

दो रुपये पच्चीस पैसे ।

तीन रुपए चालीस पैसे ।

चार रुपए पचास पैसे ।

पांच रुपए पैंसठ पैसे ।

छह रुपए पचहतर पैसे ।

सात रुपए नब्बे पैसे ।

नौ रुपए ।

दस रुपए पन्द्रह पैसे ।

ग्यारह रुपए पच्चीस पैसे ।

पांच रुपए पैंसठ पैसे ।

पन्द्रह रुपए ।

17. रद्द कर देने की लिखत, (जिसके अन्तर्गत ऐसी कोई लिखत है जिसके द्वारा पूर्व में निष्पादित की गई कोई लिखत रद्द कर दी गई है) यदि वह अनुप्रमाणित है और उसके लिए अन्यथा उपबन्ध नहीं किया गया है ।

निर्मुक्ति (सं० 55) व्यवस्थापन का प्रतिसंहरण (सं० 58 ख), पट्टे का अभ्यापन (सं० 61), न्यास का प्रतिसंहरण (सं० 64 ख) भी देखिए ।

18. (ऐसी प्रत्येक सम्पत्ति के बारे में जो अलग लौट में नीलाम पर चढ़ाई गई है और बेची गई है)

1

2

विक्रय प्रमाण-पत्र — जो लोक नीलाम द्वारा बेची गई सम्पत्ति के क्रेता को किसी सिविल या राजस्व न्यायालय या कलक्टर या अन्य राजस्व अधिकारी द्वारा दिया गया है।

शुल्क जो केवल क्रय धन की रकम के बराबर प्रतिफल वाले हस्तान्तरण (सं० 23) के लेखे लगता है।

19. प्रमाण-पत्र या अन्य दस्तावेज, जो उनके धारक या किसी अन्य व्यक्ति के किसी निगमित कम्पनी या अन्य निगमित निकाय में के या "इसके किन्हीं शेयरों, स्क्रिप या स्टाक सम्बन्धी अधिकार या हक को या किसी ऐसी कम्पनी या निकाय में के या उसके शेयरों, स्क्रिप या स्टाक का स्वत्व-धारी होने सम्बन्धी अधिकार या हक को साक्ष्यित करता है।

चालीस पैसे।

20. भाड़े पर पोट लेने की संविदा, अर्थात्, (कपेंचाण्ड नौका के भाड़े सम्बन्धी करार के पिवाय) कोई लिखत जिसके द्वारा कोई जलान या उनका कोई निनिर्दिष्ट प्रमुख भाग भाड़े की संविदा करने वाले के निनिर्दिष्ट प्रयोजनों के लिए भाड़े पर दिया जाता है, चाहे उस लिखत में शायति खण्ड हो या न हो।

तीन रुपए।

21.

XX

XX

XX

XX

22. प्रशान्त विलेख, अर्थात्, किसी ऋणी द्वारा निष्पादित कोई लिखत जिसके द्वारा वह अपने लेनदारों के फायदे के लिए अपनी सम्पत्ति हस्तान्तरित करता है या जिसके द्वारा उनके ऋणों पर प्रशान्त-धन या लाभांश का सदाय लेनदारों को प्रतिभूत किया जाता है या जिसके द्वारा निरोक्षकों के पर्यवेक्षण के अधीन या अनुज्ञप्ति पत्रों के अधीन ऋणी के कारबार को उसके लेनदारों के फायदे के लिए, चालू रखने के लिए उपबन्ध किया जाता है।

तीस रुपए।

23. हस्तान्तरण-पत्र [धारा-2(10) द्वारा यथा परिभाषित] जो ऐसे अन्तरण के लिए नहीं है जिसके लेखे संख्या 62 के अधीन प्रभार लगता है या छूट दी गई है।

जहां हस्तान्तरण स्था-
वर सम्पत्ति के विक्रय
की कोटि में आता है।

(क)

(ख)

जहां कि ऐसे हस्तान्तरण के लिए प्रतिफल की रकम या मूल्य जैसा हस्तान्तरण पत्र में उपवर्णित है, 50 रुपए से अधिक नहीं है;

तीन रुपए।

एक रुपया और पचास पैसे।

जहां कि वह 50 रुपए से अधिक है, किन्तु 100 रुपए से अधिक नहीं है;

छह रुपए।

तीन रुपए।

जहां कि वह 100 रुपए से अधिक है, किन्तु 200 रुपए से अधिक नहीं है;

बारह रुपए।

छह रुपए।

1

2

जहां कि वह 200 रुपए से अधिक है, किन्तु 300 रुपए से अधिक नहीं है;
 जहां कि यह 300 रुपए से अधिक है, किन्तु 400 रुपए से अधिक नहीं है;
 जहां कि वह 400 रुपए से अधिक है, किन्तु 500 रुपए से अधिक नहीं है;
 जहां कि वह 500 रुपए से अधिक है, किन्तु 600 रुपए से अधिक नहीं है;
 जहां कि वह 600 रुपए से अधिक है, किन्तु 700 रुपए से अधिक नहीं है;
 जहां कि वह 700 रुपए से अधिक है, किन्तु 800 रुपए से अधिक नहीं है;
 जहां कि वह 800 रुपए से अधिक है, किन्तु 900 रुपए से अधिक नहीं है;
 जहां कि वह 900 रुपए से अधिक है किन्तु 1,000 रुपए से अधिक नहीं है;
 और 1,000 रुपये से अधिक प्रत्येक 500 रुपये या उसके भाग के लिए।

(क)

(ख)

अठारह रुपए। नौ रुपए।
 चौबीस रुपए। बारह रुपए।
 तीस रुपए। पन्द्रह रुपए।
 छतीस रुपए। अठारह रुपए।
 ब्यालीस रुपए। इक्कीस रुपए।
 अड़तालीस रुपए। चौबीस रुपए।
 चौवन रुपए। सताईस रुपए।
 साठ रुपए। तीस रुपए।
 तीस रुपये। पन्द्रह रुपये।

छूट

प्रतिलिप्यधिकार अधिनियम, 1957 की धारा 18 के अधीन प्रतिलिप्यधिकार समनुदेशन।

सह-भागीदारी विलेख/भागीदारी (सं० 46) देखिए।

24. प्रति या उद्धरण, जिसकी बाबत किसी लोक अधिकारी को या उसके आदेश से यह प्रमाणित किया गया है कि वह सही प्रति या उद्धरण है और जो न्यायालय फीस से सम्बन्धित तत्समय प्रवृत्त विधि के अधीन प्रभार्य नहीं है—

- (i) यदि उसका मूल पाठ शुल्क से प्रभार्य नहीं है या यदि वह शुल्क जो उस पर प्रभार्य है, दो रुपए से अधिक नहीं है;
- (ii) किसी अन्य मामले में जो धारा 6-क के उपबन्धों में नहीं आता है।

एक रुपया पन्द्रह पैसे।

तीन रुपए।

छूट

(क) किसी ऐसे कागज पत्र की प्रतिलिपि जिसके सम्बन्ध में किसी लोक अधिकारी से विधि द्वारा अभिव्यक्त रूप में यह अपेक्षित है कि वह किसी लोक कार्यालय में या किसी लोक प्रयोजन के निमित्त अभिलेख के लिए उसे बनाए या दे।

1

2

(ख) जन्मों, बपतिरमों, नामकरणों, समर्पणों, विवाह-विच्छेदों, मृत्युओं या दफन से सम्बन्धित किसी रजिस्टर की, या उसमें के किसी उद्धरण की प्रतिलिपि।

25. किसी लिखत का, जो कि शुल्क से प्रभार्य है और जिसके सम्बन्ध में उचित शुल्क दे दिया गया है, प्रतिलेख या दूसरी प्रति --

(क) यदि वह शुल्क, जो मूल लिखत से प्रभार्य है, दो रुपए से अधिक नहीं है; एक रुपया पन्द्रह पैसे।

(ख) किसी अन्य मामले में जो धारा 6-क के उपबन्धों में नहीं आता है। तीन रुपए।

छूट

कृषकों को किए गए किसी पट्टे का प्रतिलेख, जब कि ऐसा पट्टा शुल्क से छूट प्राप्त हो।

26. सीमा शुल्क बन्ध-पत्र --

(क) जहां कि रकम 1,000 रुपए से अधिक नहीं है; वही शुल्क जो ऐसी रकम के अनुसार बन्ध-पत्र (सं 0 15) पर लगता है।

(ख) किसी अन्य मामले में। पन्द्रह रुपए।

27. डिबेंचर (चाहे वह बन्धक डिबेंचर हो या नहीं) विषय प्रतिभूति होते हुए जो --

(क) जो पृष्ठांकन द्वारा या अन्तरण की पृथक लिखत द्वारा, अन्तरणीय है; जैसा अनुसूची I में है।

(ख) परिदान द्वारा अन्तरणीय है। जैसा अनुसूची I में है।

स्पष्टीकरण -- "डिबेंचर" पद के अन्तर्गत उससे संलग्न कोई ब्राज के कूपन हैं, किन्तु ऐसे कूपनों की रकम, शुल्क का प्राक्कलन करने में सम्मिलित नहीं की जाएगी।

छूट

ऐसा डिबेंचर जिसे किसी निगमित कम्पनी या अन्य निगमित निकाय ने ऐसे रजिस्ट्रीकृत बन्धक-विलेख के निबन्धनानुसार निर्गमित किया गया है, उन डिबेंचरों की जो उसके अधीन निर्गमित किए जाने हैं पूरी रकम की बाबत सम्यक् रूप से सट्टामित हैं, और जिसके द्वारा उधार लेने वाली कम्पनी या निकाय, अपनी सम्पत्ति, पूर्णतः या भागतः डिबेंचरधारियों के फायदे के लिए न्यासियों के हवाले करता है:

परन्तु यह तब जब कि इस प्रकार निर्गमित डिबेचरों की बाबत यह अभिव्यक्त किया गया हो कि वे उक्त बन्धक-विलेख के निबन्धनानुसार निर्गमित किए गए हैं।

बन्ध-पत्र (सं 15) और धारा 8 और धारा 55 भी देखिए।
किसी न्यास की घोषणा-न्यास (सं 64 देखिए)।

28. माल की बाबत परिदान आदेश,
हक विलेखों का निक्षेप—हक विलेखों के निक्षेप, पणयम या गिरवों सम्बन्धित करार (सं 6) देखिए।

पच्चीस पैसे।

भागीदारी का विघटन—भागीदारी (सं 46) देखिए।

29. विवाह-विच्छेद की लिखत, अर्थात्, कोई ऐसी लिखत जिसके द्वारा कोई व्यक्ति अपने विवाह का विघटन करता है।
मेहर की लिखत—देखिए व्यवस्थापन (सं 58)
दूसरी प्रति—देखिए प्रतिलेख (सं 25)।

तीस रुपए।

30. किसी उच्च न्यायालय की नामावली में अधिवक्ता, वकील या अटर्नी के रूप में प्रविष्टि —

(क) अधिवक्ता या वकील के मामले में;

सात सौ पचास रुपए।

(ख) अटर्नी के मामले में।

सात सौ पचास रुपए।

छूट

किसी उच्च न्यायालय की नामावली में किसी अधिवक्ता, वकील या अटर्नी की प्रविष्टि जब कि वह पहले से ही किसी उच्च न्यायालय में अभ्याविष्ट है।

31. सम्पत्ति के विनियम की लिखत—

उद्धरण 1 दिए गए प्रतिलिपि (संख्या 24)

वही शुल्क जो अधिकतम मूल्य की सम्पत्ति के मूल्य के बराबर प्रतिकल वाले हस्तान्तरण-पत्र (संख्या 23) पर ऐसी लिखत में उपवर्णित है, इस अधिनियम के अन्तर्गत लगता है।

32. अतिरिक्त भार की लिखत, अर्थात्, कोई ऐसी लिखत जो बन्धक सम्पत्ति पर भार अधिरोपित करती है —

वही शुल्क जो [सं 40 (क)] में कब्जा सहित बन्धक विलेख के लिए ऐसी लिखत द्वारा प्रतिभूत अतिरिक्त भार की रकम के समान रकम पर, लगता है।

(क) जबकि मूल बन्धक अनुच्छेद सं 40 के खण्ड (क) में निर्दिष्ट किए गए वर्णनों में से किसी एक वर्णन का है (अर्थात् कब्जे सहित)।

(ख) जबकि ऐसा बन्धक अनुच्छेद सं० 40 के खण्ड (ख) में निर्दिष्ट किए गए विवरणों में से किसी प्रकार के विवरण का है (अर्थात् कब्जा रहित) —

(i) यदि अतिरिक्त भार की लिखत के निष्पादन के समय सम्पत्ति का कब्जा ऐसी लिखत के अधीन दे दिया गया है या दिए जाने के लिए करार किया गया है ;

(ii) यदि कब्जा इस प्रकार नहीं दिया गया हो।

33. दान की लिखत जो व्यवस्थापन (सं० 52) या विल या अन्तरण (सं० 62) नहीं है।

भाड़ा सम्बन्धी करार या सेवा के लिए करार।
देखिए करार (सं० 5)।

34. क्षतिपूर्ति-बन्ध-पत्र

निरोधकत्व-विलेख प्रशमन विलेख (संख्या 22)
देखिए।

35. पट्टा जिसके अन्तर्गत अवर-पट्टा या उप-पट्टा तथा पट्टे या उप-पट्टे पर देने के लिए कोई करार है।

(क) जहाँ कि ऐसे पट्टे द्वारा भाटक नियत किया गया है और कोई प्रीमियम दिया नहीं गया है या परिदत्त नहीं किया गया है—

(i) जहाँ कि पट्टा एक वर्ष से कम अवधि के लिए तात्पर्यित है ;

वही शुल्क जो [सं० 40 (क)] में कब्जा सहित बन्धक विलेख के लिए (जिसके अन्तर्गत मूल बन्धक और पहले किया गया कोई अतिरिक्त भार है) भार की कुल रकम के बराबर लगता है, जिसमें से वह शुल्क, जो ऐसे मूल बन्धक और अतिरिक्त भार पर चुकाया गया है कम कर दिया जाएगा।

वही शुल्क जो ऐसी लिखत द्वारा प्रतिभूत किए गए अतिरिक्त भार की रकम के लिए बन्ध-पत्र (सं० 15) पर लगता है।

वही शुल्क जो सम्पत्ति के मूल्य के, जो ऐसी लिखत में उपवर्णित है, बराबर प्रतिफल वाले हस्तांतरण-पत्र (सं० 23) पर इस अधिनियम द्वारा उद्गृहीत किया जाता है।

वही शुल्क जो उतनी ही रकम के प्रतिभूति-पत्र (सं० 5) पर लगता है।

वही शुल्क जो ऐसे बंधपत्र (सं० 15) पर, ऐसे पट्टे के अधीन देय या परिदेय पूरी रकम के लिए लगता है।

- (ii) जहां कि पट्टा ऐसी अवधि के लिए तात्पर्यित है जो एक वर्ष से कम नहीं है, किन्तु पांच वर्ष से अधिक नहीं है।
- (iii) जहां कि पट्टा ऐसी अवधि के लिए तात्पर्यित है जो पांच वर्ष से अधिक है, किन्तु दस वर्ष से अधिक नहीं है;
- (iv) जहां कि पट्टा ऐसी अवधि के लिए तात्पर्यित है जो दस वर्ष से अधिक है, किन्तु बीस वर्ष से अधिक नहीं है;
- (v) जहां कि पट्टा ऐसी अवधि के लिए तात्पर्यित है जो बीस वर्ष से अधिक है, किन्तु तीस वर्ष से अधिक नहीं है;
- (vi) जहां कि पट्टा ऐसी अवधि के लिए तात्पर्यित है जो बीस वर्ष से अधिक है, किन्तु तीस वर्ष से अधिक नहीं है;
- (vii) जहां कि पट्टा ऐसी अवधि के लिए तात्पर्यित है जो तीस वर्ष से अधिक है, किन्तु 100 वर्ष से अधिक नहीं है;
- (viii) जहां पट्टा 100 वर्ष से अधिक की अवधि या शाश्वतता के लिए तात्पर्यित है;
- (ix) जहां कि पट्टा किसी निश्चित अवधि के लिए तात्पर्यित नहीं है;

वही शुल्क जो आरक्षित किए गए औसत वार्षिक भाटक की रकम या मूल्य के बन्ध-पत्र (सं० 15) पर लगता है।

वही शुल्क जो आरक्षित किए गए औसत वार्षिक भाटक की रकम या मूल्य के बराबर प्रतिफल वाले हस्तान्तरण-पत्र (सं० 23) पर इस अधिनियम के अधीन लगता है।

वही शुल्क जो आरक्षित किए गए औसत वार्षिक भाटक की रकम या मूल्य के दुगुने के बराबर प्रतिफल वाले हस्तान्तरण-पत्र (सं० 23) पर इस अधिनियम के अधीन लगता है।

वही शुल्क जो आरक्षित किए गए औसत वार्षिक भाटक की रकम या मूल्य के तीन गुना के बराबर प्रतिफल वाले हस्तान्तरण-पत्र (सं० 23) पर इस अधिनियम के अधीन लगता है।

वही शुल्क जो आरक्षित किए गए औसत वार्षिक भाटक की रकम या मूल्य के तीन गुणा के बराबर प्रतिफल वाले हस्तान्तरण पत्र (सं० 23) पर इस अधिनियम के अधीन लगता है।

वही शुल्क जो आरक्षित किए गए औसत वार्षिक भाटक की रकम या मूल्य के चार गुणा के बराबर प्रतिफल वाले हस्तान्तरण-पत्र (सं० 23) पर इस अधिनियम के अधीन लगता है।

वही शुल्क जो एक-मात्र कृषि प्रयोजनों के लिए पट्टे की दशा में, 1/10 भाग और किसी अन्य दशा में भाटक के पूर्ण रकम का 1/6 भाग जो प्रथम पचास वर्ष के लिए दिया जाएगा या परिदत्त किया जाएगा, के बराबर प्रतिफल वाले हस्तान्तरण-पत्र (सं० 23) पर इस अधिनियम के अधीन लगता है।

वही शुल्क जो ऐसे औसत वार्षिक भाटक की जो प्रथम दस वर्ष के लिए

दशा में दिया जाएगा या परिदत्त किया जाएगा जिसमें कि पट्टा उस अवधि तक चालू रहता है, रकम या मूल्य के तीन गुणा प्रतिफल वाले हस्तान्तरण पत्र (सं० 23) पर इस अधिनियम के अधीन लगता है।

(ख) जहां कि पट्टा किसी नजराने या प्रीमियम के लिए या अग्रिम दिए गए धन के लिए मंजूर किया गया है और जहां कि कोई भाटक आरक्षित नहीं है;

वही शुल्क जो ऐसे नजराने या प्रीमियम या अग्रिम धन की रकम या मूल्य के, जो पट्टे में उपवर्णित है, बराबर प्रतिफल वाले हस्तान्तरण-पत्र (सं० 23) पर इस अधिनियम के अधीन लगता है।

(ग) जहां कि पट्टा आरक्षित किए गए भाटक के अतिरिक्त किसी नजराने या प्रीमियम के लिए या अग्रिम दिए गए धन के लिए मंजूर किया गया है;

वही शुल्क जो ऐसे नजराने या प्रीमियम या अग्रिम धन की रकम या मूल्य के जो पट्टे में उपवर्णित है, बराबर प्रतिफल वाले हस्तान्तरण-पत्र (सं० 23) पर इस अधिनियम के अधीन लगता है, और जो उस शुल्क के अतिरिक्त होगा जो उस दशा में, जिसमें कि कोई नजराना या प्रीमियम या अग्रिम धन नहीं दिया गया है, या परिदत्त नहीं किया गया है, ऐसे पट्टे पर देय होता :

परन्तु किसी भी दशा में जब पट्टा करने का करार पट्टे के लिए अपेक्षित मूल्यानुसार स्टाम्प से स्टाम्पित है, और ऐसे करार के अनुसरण में पट्टा तत्पश्चात् निष्पादित किया गया है, तब ऐसे पट्टे पर शुल्क एक रुपया पचास पैसे से अधिक नहीं होगा।

छूट

खेतिहर की दशा में तथा खेती करने के प्रयोजनों के लिए पट्टा (जिसके अन्तर्गत खाद्य या पेय के उत्पादन के लिए वृक्षों का पट्टा है)। जो कोई नजराना या प्रीमियम दिए बिना या परिदत्त किए बिना निष्पादित किया गया है और जब कि कोई निश्चित अवधि अभिव्यक्त की गई है और ऐसी अवधि एक वर्ष से अधिक नहीं है, या जबकि आरक्षित किया गया औसत वार्षिक भाटक एक सौ रुपये से अधिक नहीं है।

इस छूट में खेती के प्रयोजन के लिए किए गए पट्टे में वास-भूमि या टैंक सहित खेती करने के लिए पट्टे पर ली गई भूमि सम्मिलित है।

स्पष्टीकरण.—जब कोई पट्टेदार कोई आवर्ती भार, जैसे कि सरकारी राजस्व उपकरणों का भू-स्वामी के अंश या स्वामी का नगरपालिका के रेट या करों के अंश, जो विधि द्वारा पट्टाकर्ता से वसूलीय हैं, पट्टेदार द्वारा सदेत की जाने को करार पाई गई रकम, भाटक का ही भाग समझी जाएगी।

36. शेरों का आबटन-पत्र

तीस पैसे।

37. प्रत्यय-पत्र

प्रत्याभूति-पत्र
करार (सं० 5) देखिए।

जैसा कि अनुसूची 1 में है।

38. अनुवृत्ति-पत्र, अर्थात्, ऋणी तथा उसके लेनदारों के बीच इस बात का कोई करार कि लेनदार विनिर्दिष्ट समय के लिए अपने दावों को निलम्बित कर देंगे और ऋणी को स्वयं अपने विवेकानुसार कारबार चलाने देंगे।

तीस रुपए।

39. कम्पनी का संगम-ज्ञापन—

(क) यदि उसके साथ कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 26, धारा 27 और धारा 28 के अधीन संगम-अनुच्छेद संलग्न हो ;

साठ रुपए।

(ख) यदि उसके साथ उपर्युक्त संलग्न न हो

एक सौ पचास रुपए।

छूट

किसी भी ऐसे संगम का ज्ञापन जो लाभ के लिए नहीं बनाया गया है और कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 25 के अधीन रजिस्ट्रीकृत है।

40. बन्धक-विलेख,—जो हक विलेखों के निक्षेप, पणयम, या गिरवी (सं० 6), पोत बन्ध-पत्र (सं० 16), फसल का बन्धक (सं० 41), जहाजी माल बन्ध-पत्र (सं० 56), या प्रतिभूति बन्ध-पत्र (सं० 57) से सम्बन्धित करार नहीं है,—

(क) जबकि ऐसे विलेख में समाविष्ट सम्पत्ति या सम्पत्ति का किसी भाग का कब्जा बन्धककर्ता द्वारा दे

दिया गया है या दिए जाने के लिए करार किया गया है —

जहां कि ऐसी लिखित द्वारा प्रतिभूत रकम 50 रुपए से अधिक नहीं है;	एक रुपया पन्द्रह पैसे ।
जहां कि वह 50 रुपए से अधिक है, किन्तु 100 रुपए से अधिक नहीं है;	दो रुपए पच्चीस पैसे ।
जहां कि वह 100 रुपए से अधिक है, किन्तु 200 रुपए से अधिक नहीं है;	चार रुपए पचास पैसे ।
जहां कि वह 200 रुपए से अधिक है, किन्तु 300 रुपए से अधिक नहीं है;	छः रुपए पचहत्तर पैसे ।
जहां कि वह 300 रुपए से अधिक है, किन्तु 400 रुपए से अधिक नहीं है;	नौ रुपए ।
जहां कि वह 400 रुपए से अधिक है, किन्तु 500 रुपए से अधिक नहीं है;	ग्यारह रुपए पच्चीस पैसे ।
जहां कि वह 500 रुपए से अधिक है, किन्तु 600 रुपए से अधिक नहीं है;	तेरह रुपए पचास पैसे ।
जहां कि वह 600 रुपए से अधिक है, किन्तु 700 रुपए से अधिक नहीं है ;	गन्धरु रुपए पचहत्तर पैसे ।
जहां कि वह 700 रुपए से अधिक है, किन्तु 800 रुपए से अधिक नहीं है ;	अठारह रुपए ।
जहां कि वह 800 रुपए से अधिक है, किन्तु 900 रुपए से अधिक नहीं है;	बीस रुपए पच्चीस पैसे ।
जहां कि वह 900 रुपए से अधिक है, किन्तु 1,000 रुपए से अधिक नहीं है;	बाईस रुपए पचास पैसे ।
और 1,000 रुपए से अधिक प्रत्येक पांच सौ रुपए या उसके भाग के लिए ;	ग्यारह रुपए पच्चीस पैसे ।

(ख) जबकि यथा-पूर्वोक्त कब्जा नहीं दिया गया है या दिए जाने के लिए करार नहीं किया गया है;

वही शुल्क जो ऐसे विलेख द्वारा प्रतिभूत रकम के बन्ध-पत्र (सं० 15) पर लगता है ।

स्पष्टीकरण — ऐसे बन्धककर्ता के बारे में, जो बन्धकदार को बन्धकित सम्पत्ति या उसके भाग का भाटक या पट्टा राशि का संग्रहण करने के लिए मुख्तारनामा देता है, यह समझा जाएगा कि वह इस अनुच्छेद के अर्थ में कब्जा देता है;

(ग) जबकि कोई सांवांशिक या सहायक या अतिरिक्त या प्रतिस्थापित प्रतिभूति है, या उपरोक्त वर्णित प्रयोजन के लिए और आश्वासन के रूप में जहां

कि मूल या प्राथमिक प्रतिभूति सम्यक् रूप में
स्टाम्पित है—

ऐसी प्रत्येक प्रतिभूति राशि के लिए जो 1,000 रुपए एक रुपया पन्द्रह पैसे ।
से अधिक नहीं है ;

और 1,000 रुपए से अधिक ऐसे प्रत्येक 1,000 या एक रुपया पन्द्रह पैसे ।
उसके भाग के लिए जो प्रतिभूत हो ।

छूटें

वे लिखतें, जो भूमि विकास उधार अधिनियम, 1883
या कृषक उधार अधिनियम, 1884 के अधीन उधार
लेने वाले व्यक्तियों द्वारा ऐसे उधारों को चुकाने
के लिए प्रतिभूति के रूप में निष्पादित की गई है ।

41. फसल का बन्धक, जिसके अन्तर्गत कोई ऐसी लिखत
है जो फसल के बन्धक पर दिए गए उधार के चुकाए जाने को प्रति-
भूत करने के लिए किसी करार को साक्षित करती है, चाहे बन्धक
के समय फसल अस्तित्व में हो या न हो—

(क) जबकि ऐसा उधार, ऐसे समय पर चुकाया जाना
हो जो ऐसी लिखत की तारीख के तीन मास के
अधिक बाद का नहीं है—

ऐसी प्रत्येक प्रतिभूत राशि के लिए जो 200 रुपए पन्द्रह पैसे ।
से अधिक नहीं है ;

और 200 रुपए से अधिक ऐसे प्रत्येक 200 रुपए पन्द्रह पैसे ।
या उसके ऐसे भाग के लिए जो प्रतिभूत है ;

(ख) जबकि ऐसा उधार, ऐसे समय पर चुकाया जाना
हो, जो ऐसी लिखत की तारीख को तीस मास
से अधिक का है किन्तु अठारह मास से अधिक
नहीं है —

ऐसी प्रत्येक प्रतिभूति राशि के लिए जो 100 रुपए तीस पैसे ।
से अधिक नहीं है ;

और 100 रुपए से अधिक ऐसे प्रत्येक 100 रुपए या तीस पैसे ।
उसके भाग के लिए जो प्रतिभूत है ।

42. नोटरी सम्बन्धी कार्य, अर्थात्, कोई ऐसी लिखत, चार रुपए पचास पैसे ।
पृष्ठांकन, टिप्पण, अनुप्रमाणन प्रमाण-पत्र या प्रविष्टि, जो
प्रसाक्ष्य (सं० 50) नहीं है और जो नोटरी पब्लिक द्वारा अपने

1

2

व्यक्ति कर्तव्यों के निष्पादन में या किसी अन्य व्यक्ति द्वारा नोटरी पब्लिक के रूप में विधिपूर्वक कार्य करते हुए बनाई गई है या हस्ताक्षरित की गई है। विपत्र या वचन-पत्र का प्रसाक्ष्य (सं० 50) भी देखिए।

43. टिप्पणी या ज्ञापन, जो दलाल या अभिकर्ता द्वारा अपने मालिक को, ऐसे मालिक के लेखे निम्नलिखित के क्रय या विक्रय की प्रज्ञापना देते हुए भेजा गया है—

(क) ऐसे किसी माल का, जो बीस रुपए से अधिक मूल्य का है ;

चालीस पैसे।

(ख) ऐसे किसी स्टॉक या विपण्य प्रतिभूति का, जो बीस रुपए से अधिक मूल्य का है।

स्टॉक या प्रतिभूति के मूल्य के प्रत्येक 10,000 रुपए या उसके भाग के लिए जो किसी भी दशा में कुल बीस रुपए तीस पैसे से अधिक नहीं होगा।

44. पोत के मास्टर द्वारा आपत्ति का टिप्पण।

पचहत्तर पैसे।

45. विभाजन की लिखत—

[धारा 2(15) द्वारा यथापरिभाषित]।

वही शुल्क जो ऐसी सम्पत्ति से पृथक किए गए अंश या अंशों के मूल्य की रकम के बन्ध-पत्र (सं० 15) पर लगता है।

विशेष टिप्पण—सम्पत्ति विभाजन किए जाने के पश्चात् बच रहे सबसे बड़े अंश को (या यदि दो या अधिक समान मूल्य के अंश हैं जो अन्य अंशों में से किसी भी अंश से छोटे नहीं हैं, तो ऐसे समान अंशों में से एक अंश को) ऐसा अंश समझा जाएगा जिससे अन्य अंश पृथक कर दिए गए हैं:

परन्तु सदैव यह कि—

(क) जबकि विभाजन की कोई ऐसी लिखत निष्पादित की गई है जिसमें सम्पत्ति को पृथक-पृथक विभक्त करने का करार है और ऐसे करार के अनुसरण में विभाजन कर दिया गया है, तब ऐसा विभाजन प्रभावी करने वाली

लिखत पर प्रभार्य शुल्क में से प्रथम लिखत की बाबत चुकाए गए शुल्क की रकम कम कर दी जाएगी, किन्तु वह एक रुपया पन्द्रह पैसे से कम नहीं होगी;

(ख) जहां कि भूमि, राजस्व बन्दोबस्त पर ऐसी कालावधि के लिए, जो तीस वर्ष से अधिक नहीं है, धारित है, और पूरी निर्धारित राशि दी जा रही है, वहां शुल्क के प्रयोजन के लिए मूल्य उसके वार्षिक राजस्व के दस गुना से अधिक परिकलित नहीं किया जाएगा;

(ग) जहां कि किसी राजस्व प्राधिकारी या किसी सिविल न्यायालय द्वारा विभाजन का पारित अंतिम आदेश या विभाजन करने का निर्देश देते हुए मध्यस्थ द्वारा किया गया पंचाट, विभाजन की किसी लिखत के लिए अपेक्षित स्टाम्प से स्टाम्पित किया गया है, और ऐसे आदेश या पंचाट के अनुसरण में विभाजन की लिखत तत्पश्चात् निष्पादित की गई है, वहां ऐसी लिखत पर शुल्क एक रुपया पन्द्रह पैसे से अधिक नहीं होगा।

46. भागीदारी —

क-भागीदारी की लिखत—

(क) जहां भागीदारी की पूंजी 500 रुपए से अधिक नहीं है;

तीस रुपए पचहत्तर पैसे।

(ख) किसी अन्य मामले में

बाईस रुपए पचास पैसे।

ख-भागीदारी का विघटन पण्यम या गिरवी-हक विलेखों के निक्षेप, पण्यम या गिरवी से सम्बन्धित करार (सं० 6) देखिए।

पन्द्रह रुपए।

47. बोमा पालिसी—

जैसा अनुसूची 1 में है।

48. [धारा 2(21) में यथापरिभाषित] —मुख्तारनामा जो परोक्षी (सं० 52) नहीं है, —

- (क) जब कि वह, एक ही संव्यवहार से सम्बन्धित एक या अधिक दस्तावेजों का रजिस्ट्रीकरण उपाप्त करने के एकमात्र प्रयोजन के लिए या ऐसी एक या अधिक दस्तावेजों का निष्पादन स्वीकृत करने के लिए निष्पादित किया गया है; एक रुपया पचास पैसे।
- (ख) जब कि वह प्रेसिडेंसी लघुवाद न्यायालय अधिनियम, 1882 के अधीन बादों या कार्यवाहियों में अपेक्षित है; एक रुपया पचास पैसे।

- (ग) जबकि वह एक व्यक्ति या अधिक व्यक्तियों को खण्ड (क) में वर्णित मामले से भिन्न किसी एक ही संव्यवहार में कार्य करने के लिए प्राधिकृत करता है; तीन रुपए।

- (घ) जबकि वह पांच से अनधिक व्यक्तियों की संयुक्ततः और पृथक्तः एक से अधिक संव्यवहारों में या साधारणतः कार्य करने के लिए प्राधिकृत करता है; पन्द्रह रुपए।

- (ङ) जब कि वह पांच से अधिक किन्तु दस से अनधिक व्यक्तियों को संयुक्ततः या पृथक्तः एक से अधिक संव्यवहारों में या साधारणतः कार्य करने के लिए प्राधिकृत करता है; तीस रुपए।

- (च) जबकि वह प्रतिफल के लिए दिया गया है तथा अटर्नी को किसी स्थावर सम्पत्ति का विक्रय करने के लिए प्राधिकृत करता है; वही शुल्क जो प्रतिफल की रकम के हस्तान्तरण पत्र (सं० 23) पर इस अधिनियम के अधीन लगता है।

- (छ) किसी अन्य मामले में — प्राधिकृत किए गए प्रति व्यक्ति के लिए तीन रुपए।

भली भाँति ध्यान दें—“रजिस्ट्रीकरण” पद के अन्तर्गत ऐसी प्रत्येक क्रिया आती है, जो भारतीय रजिस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 के अधीन रजिस्ट्रीकरण से आनुषांगिक है।

स्थगिकरण —एक से अधिक व्यक्तियों की बाबत उस दशा में जिसमें कि वे एक ही फर्म के हैं, इस अनुच्छेद के प्रयोजनों के लिए यह समझा जाएगा कि वे एक ही व्यक्ति हैं।

49. वचन पत्र—

जैसा कि अनुसूची 1 में है

50. विनिमय-पत्र या वचन-पत्र विषयक प्रसाक्ष्य अर्थात्, तीन रुपए।
नोटरी पब्लिक या उस हैसियत में विधिपूर्वक कार्य करने वाले
किसी अन्य व्यक्ति द्वारा लिखित रूप में की गई ऐसी घोषणा,
जो विनिमय-पत्र या वचन-पत्र जो अनादर करने का अनु-
प्रमाणन करती है।

51. पोत के मास्टर द्वारा आपत्ति

जैसा कि अनुसूची 1 में है।

52. परीक्षा

जैसा कि अनुसूची 1 में है।

53. रसीद

जैसा कि अनुसूची 1 में है।

54. बन्धकित सम्पत्ति का प्रतिहस्तांतरण —

(क) यदि प्रतिफल जिसके लिए सम्पत्ति बन्धक की गई
थी, 1,000 रुपय से अधिक नहीं है;

वही शुल्क जो ऐसे प्रतिकल की रकम जो
वह प्रतिहस्तान्तरण-पत्र में उपवर्णित है,
वाले हस्तान्तरण-पत्र (सं० 23) पर इस
अधिनियम के अधीन लगता है।

(ख) अन्य किसी मामले में—

(i) यदि प्रतिहस्तान्तरण-पत्र, नगरपालिका, छावनी-
बोर्ड, छोटा नगर या अधिसूचित क्षेत्र में स्थित
स्थावर, सम्पत्ति से सम्बन्धित है;

पैंतालीस रुपए।

(ii) अन्य किसी मामले में।

तीस रुपए।

55. निर्मुक्ति, अर्थात् कोई लिखित, (जो ऐसी निर्मुक्ति नहीं
है जिसके लिए धारा 23-क द्वारा उपबन्ध किया गया है)
जिसके द्वारा कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति पर दावे का या
किसी विनिर्दिष्ट सम्पत्ति पर दावे का त्याग कर देता है—

(क) यदि दावे की रकम या मूल्य 1,000 रुपए से अधिक
नहीं है;

वही शुल्क जो ऐसी रकम या मूल्य जो
उस निर्मुक्ति में उपवर्णित है, वाले बन्ध-
पत्र (सं० 15) पर लगता है।

(ख) किसी अन्य मामले में।

पन्द्रह रुपए।

56. जहाजी माल बन्ध-पत्र, अर्थात् कोई लिखत जो उस
उधार के लिए प्रतिभूति देती है जो किसी पोत पर लादे किसी
फलक पर या लादे जाने वाले स्थोरा पर लिया गया है और
जिसकी अदायगी स्थोरा के गन्तव्य पत्तन पर पहुँचने पर समा-
श्रित है।

वही शुल्क जो प्रतिभूत किए गए उधार की
की रकम के बन्ध-पत्र (सं० 16) पर लगता
है।

1

2

किसी न्यास या व्यवस्थापन का प्रतिसंहरण --व्यवस्थापन (सं0 58)
न्यास (सं0 64) देखिए ।

57. प्रतिभूति-बंध-पत्र या बन्धक विलेख जो किन्हीं पदीय कर्तव्यों के सम्यक् निष्पादन के लिए प्रतिभूति के रूप में निष्पादित किया गया है, या जो उसके आधार पर प्राप्त धन राशि या अन्य सम्पत्ति का लेखा-जोखा देने के लिए निष्पादित किया गया है या किसी संविदा के सम्यक् पालन या दायित्व के निर्वहन को सुनिश्चित करने के लिए प्रतिभू द्वारा निष्पादित किया गया है --

(क) जबकि प्रतिभूत रकम 1,000 रुपए से अधिक नहीं है;

(ख) किसी अन्य मामले में ।

वही शुल्क जो प्रतिभूत रकम के बन्ध-पत्र (सं0 15) पर लगता है ।

पन्द्रह रुपए ।

छूटें

बन्ध-पत्र या अन्य लिखत जबकि वह निष्पादित किया जाए --

(क) किसी व्यक्ति द्वारा इस बात की प्रत्याभूति देने के प्रयोजनार्थ किसी खैराती औषधालय या अस्पताल या लोक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य के लिए दिए गए प्राइवेट चन्दों से व्युत्पन्न स्थानीय आय प्रतिमास विनिर्दिष्ट राशि से कम नहीं होगी;

(ख) ऐसे व्यक्तियों द्वारा जिन्होंने भूमि विकास उधार अधिनियम, 1883 या कृषक उधार अधिनियम, 1884 के अधीन अग्रिम धन लिए हैं, या उनके प्रतिभूओं द्वारा ऐसे अग्रिम धन के चुका दिए जाने के लिए प्रतिभूति के रूप में;

(ग) सरकार के अधिकारियों द्वारा या उनके प्रतिभूओं द्वारा किसी पद के कर्तव्यों के सम्यक् निष्पादन को या उनके अपने पद के आधार पर प्राप्त धन राशि या अन्य सम्पत्ति का सम्यक् रूप से लेखा देने को सुनिश्चित करने के लिए ।

58. व्यवस्थापन--

क-व्यवस्थापन की लिखत (जिसके अन्तर्गत मेहर विलेख है) ।

वही शुल्क जो व्यवस्थापित सम्पत्ति की रकम या मूल्य के जो उस व्यवस्थापन लिखत में उपवर्णित है, बराबर राशि के बन्ध-पत्र (सं0 15) पर लगता है ।

छूट

विवाह के अवसर पर मुसलमानों के बीच निष्पादित किया गया मेहर विलेख ।

ख. व्यवस्थापन का प्रतिसंहरण-न्यास (सं० 64) भी देखिए ।

वही शुल्क जो सम्बन्धित सम्पत्ति की रकम या मूल्य के, जो प्रतिसंहरण लिखत में उपवर्णित है, बराबर राशि क बंध-पत्र (सं० 15) पर लगता है, किन्तु जो तीस रुपए से अधिक नहीं होगा ।

59. शेयर वारंट वाहक के लिए कम्पनी अधिनियम, 1956 के अधीन निर्गमित किए गए हैं ।

वारंट में विनिर्दिष्ट शेयरों की अभिहित रकम के बराबर कक्षा सहित बंधक विलेख सं० 40(क) पर संदेय शुल्क का डेढ़ गुणा शुल्क ।

छूट

शेयर अधिपत्र, जब वह किसी कम्पनी द्वारा कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 114 के अनुसरण में निर्गमित किया गया है, स्टाम्प राजस्व कलक्टर को उस शुल्क के लिए प्रशमन धन के रूप में निम्नलिखित की अदायगी कर दी जाने पर प्रभावी होगा—

(क) कम्पनी की पूरी प्रतिश्रुत पूंजी का डेढ़ प्रतिशत ; या

(ख) यदि कोई कम्पनी जिसने उक्त शुल्क या प्रशमन-धन पूर्णतः चुका दिया है, अपनी प्रतिश्रुत पूंजी में अतिरिक्त वृद्धि निर्गमित करता है, तो इस प्रकार निर्गमित अतिरिक्त पूंजी का डेढ़ प्रतिशत ।

60. पोत परिवहन आदेश

पन्द्रह पैसे ।

61. पट्टे का अभ्यर्पण—

(क) जबकि पट्टे पर प्रभार्य शुल्क दस रुपए से अधिक नहीं है ;

वह शुल्क जो ऐसे पट्टे पर प्रभार्य है ।

(ख) किसी अन्य मामले में—

पन्द्रह रुपए ।

छूट

पट्टे का अभ्यर्पण, जबकि ऐसे पट्टे को शुल्क से छूट दी गई है ।

62. अन्तरण (चाहे वह प्रतिफल के सहित या बिना हो) —

(क) किसी निर्गमित कम्पनी या अन्य निर्गमित निकाय में के शायनों का ;

जैसा कि अनुसूची 1 में है ।

I

2

- (ख) धारा 8 द्वारा उपबन्धित डिबेंचरों के सिवाए डिबेंचरों का, जो विषय्य प्रतिभूतियां हैं, चाहे शुल्क के लिए डिबेंचर दायी हो या न हो ;
- (ग) किसी हित का बन्धपत्र, बंधक विलेख या बीमा पालिसी द्वारा प्रतिभूत ;
- (घ) एडमिनिस्ट्रेटर जनरल ऐक्ट, 1913 की धारा 25 के अधीन किसी सम्पत्ति के लिए ;
- (ङ) एक न्यासी से दूसरे न्यासी को या एक न्यासी से हिताधिकारी को किसी न्यास सम्पत्ति के प्रतिफल के बिना ।

डिबेंचर की अभिहित राशि के बराबर प्रतिफल वाले डिबेंचर (सं० 27) पर देय शुल्क का आधा ।

अधिकतम पचहत्तर रुपए के अध्यधीन शुल्क का आधा जो ऐसे बंध-पत्र, बन्धक विलेख या बीमा पालिसी पर प्रभाय है ।

बाईस रुपए पचास पैसे ।

ग्यारह रुपए पच्चीस पैसे या ऐसी कम रकम जो इस अनुच्छेद के खण्ड (क) से (ग) के अधीन प्रभाय है ।

छूटें

पृष्ठांकन द्वारा अन्तरण—

- (क) जो विनिमय पत्र, चैक या वचन पत्र का ;
- (ख) वहन-पत्र, परिदान आदेश, माल के लिए वारण्ट या माल पर हक की अन्य वाणिज्यिक दस्तावेज का ;
- (ग) बीमा पालिसी का है ;
- (घ) केन्द्रीय सरकार की प्रतिभूतियों का है ।
धारा 8 भी देखिए ।

63. पट्टे का अन्तरण समनुदेशन द्वारा न कि उप-पट्टे द्वारा ।

वही शुल्क जो अन्तरण के लिए प्रतिफल की रकम के बराबर प्रतिफल वाले हस्तांतरण पत्र (सं० 23) पर इस अधिनियम के अधीन लगता है ।

छूट

शुल्क से छूट प्राप्त किसी पट्टे का अन्तरण ।

64. न्यास —

- (क) की घोषणा किसी सम्पत्ति की या उसके बारे में जब कि विल से भिन्न किसी लिखित रूप में की गई हो ।

वही शुल्क जो सम्बन्धित सम्पत्ति की रकम या मूल्य के, जो लिखत में उप-वर्णित है, बराबर राशि के बन्ध-पत्र (सं० 15) पर लगता है, किन्तु वह पैंतालीस रुपए से अधिक नहीं होगा ।

(ख) का प्रतिसंहरण किसी सम्पत्ति का या उसके बारे में जब कि वह विल से भिन्न किसी लिखित रूप में किया गया हो।

वही शुल्क जो सम्बन्धित सम्पत्ति की रकम या मूल्य के, जो लिखत में उपवर्णित है, बराबर राशि के बन्धपत्र (सं० 15) पर लगता है, किन्तु वह तीस रुपए से अधिक नहीं होगा।

व्यवस्थापन (सं० 58) भी देखिए।

मूल्यांकन—आंकना (सं० 8) देखिए।

वकील—वकील के रूप में प्रविष्टि (सं० 30) देखिए।

65. माल के लिए वारण्ट, अर्थात् ऐसी कोई लिखत, जो उसमें नामित किसी व्यक्ति के या उसके समनुदेशितियों के या उसके धारक के उस माल में की सम्पत्ति के हक का साक्ष्य है जो किसी डाक, भाण्डागार या घाट में या उस पर पड़े हैं, जब कि ऐसी लिखत ऐसे व्यक्ति द्वारा या उसकी ओर से जिसकी अभिरक्षा में ऐसा माल है, हस्ताक्षरित या प्रमाणित की गई है।

एक रुपया पन्द्रह पैसे।